Degree 1st Paper 1st Pol. Sc (E learning Material)

राजनीतिशास्त्र का अन्य विषयों से संबंध

राजनीतिशास्त्र का अन्य कई विषयों से भी संबंध है। जिनमें प्रमुख है, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान इसके अतिरिक्त नीतिशास्त्र, लोकप्रशासन मानवविज्ञान (Anthropology) अंकशास्त्र, जीवविज्ञान नागरिकशास्त्र तथा साहित्य से भी राजनीतिशास्त्र का संबंध है।

अर्थशास्त्र अन्य सामाजिक विज्ञानों की भाँति एक पृथक शास्त्र है। इसे धन का भी विज्ञान कहा जाता है। मार्शल (Marshall) ने अर्थशास्त्र के संबंध में कहा है कि "अर्थशास्त्र एक ओर तो संपत्ति का अध्ययन है दूसरी ओर अधिक महत्वपूर्ण दिशा के मनुष्य के अध्ययन का अंश है। इसके अन्तर्गत संपत्ति के उत्पादन, वितरण, विनिमय तथा उपभोग का मुख्य रूप से अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र का संबंध प्राचीन काल से स्पष्ट है। प्राचीन काल के विद्वान अर्थशास्त्र को राजनीतिशास्त्र ही मानते थे। ग्रीक के विद्वानों ने अर्थशास्त्र को "राजनीतिक अर्थशास्त्र" कहते थे। एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक "वेल्थ आफ नेशन्स" (Wealth of Nations) में लिखा है कि अर्थशास्त्र जनता तथा राजा को समृद्ध बनाने वाला शास्त्र है। भारतीय विचारक कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र का संबंध राजनीतिशास्त्र के साथ बताया है। दोनों शास्त्रों का उद्देश्य मानव का कल्याण करना। दोनों शास्त्र व्यक्तित्व के विकास के लिए वातावरण तैयार करते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि दोनों ही शास्त्रों का सम्बन्ध मानव समाज का हित करना है। इस संबंध में "चार्ल्स बियर्ड" (Charles A Beard) ने कहा है कि "अर्थशास्त्र के बिना राजनीतिशास्त्र अवास्तविक एवं सारहीन ढाँचा मात्र है।"

Scanned with CamScanner

राजनीतिशास्त्र और मनोविज्ञान (Pol. sc. and Psychology)

मनोविज्ञान मनुष्य की मानसिक अवस्थाओं से संबंध है। मनोविज्ञान एक [illegible] विज्ञान है। आज के आधुनिक युग में इसका प्रभाव अत्यधिक विस्तृत है। अन्य सामाजिक शास्त्र इससे प्रभावित हैं। राजनीतिशास्त्र के विद्वान मनोविज्ञान पर अधिक जोर देते हैं। "मैकियावेली" ने तत्कालीन इटली की दशा सुधारने में वहां के निवासियों की मनोवृत्ति से मनोविज्ञान द्वारा लाभ उठाकर देश की दशा बदल दी। हिटलर ने भी जर्मनों के मनोभावों को भली भांति समझकर और उनकी मनोवृत्ति से लाभ उठाकर ही द्वितीय विश्वयुद्ध का बीज बोया था। इसी प्रकार भारत में महात्मा गांधी ने अंग्रेजों और भारतीयों की मनोदशा को समझकर ही राष्ट्रीय आंदोलन का सफलतापूर्वक संचालन किया था।

किसी भी सरकार की लोकप्रियता या कानून की दृढ़ता जनता की नैतिक मान्यताओं और मानसिक धारणाओं पर निर्भर करती है। इस संबंध में गार्नर (Garner) ने कहा कि "सरकार को राज्य के स्थायित्व एवं लोकप्रियता के लिए उसकी सत्ता के अधीन रहनेवाले व्यक्तियों के मानसिक विचारों और नैतिक भावनाओं को अभिव्यक्त तथा प्रतिबिंबित करना चाहिए"।

दूसरी तरफ मनोविज्ञान भी राजनीतिशास्त्र का ऋणी है, राजनीतिशास्त्र मनोविज्ञान को सामग्री प्रदान करता है। राजनीतिशास्त्र के साथ मनोविज्ञान के अभाव में राजनीतिशास्त्र का अध्ययन अधूरा है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि राजनीतिशास्त्र और मनोविज्ञान में काफी संबंध है।

राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र (Pol. sc. and Ethics)

नीतिशास्त्र को आचारशास्त्र भी कहा जाता है। इसमें मनुष्य की नैतिकता का अध्ययन किया जाता है। अन्य शास्त्रों की भांति राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र में भी पारस्परिक निर्भरता है। प्राचीन काल में विद्वान दोनों शास्त्रों को एक ही समझते थे। यूनानी विद्वानों की दृष्टि में नीतिशास्त्र और राजनीतिशास्त्र

Scanned with CamScanner

एक ही शासन के दो पक्ष है। "प्लेटो" (Plato) ने कहा है कि "राज्य को चाहिए कि मनुष्यों को सदाचार की शिक्षा दे"। प्लेटो भी राजनीतिशास्त्र और आचारशास्त्र को एक ही समझता था। "अरस्तु" का मत है कि "राज्य का उद्देश्य है कि जनता की भलाई करना तथा मनुष्यों के जीवन को उन्नत बनाना"। रूसो का सामान्य इच्छा (General Will) राजनीति की अपेक्षा नैतिकता से अधिक निकट थी। इस प्रकार बहुत हद तक राजनीतिशास्त्र नीतिशास्त्र का ऋणी है।

दूसरी ओर नीतिशास्त्र भी राजनीतिशास्त्र का आभारी है। राजनीतिक दार्शनिकों की नीतिशास्त्र को बहुत बड़ी देन है। प्लेटो, अरस्तु, ग्रीन आदि राजनीति विचारकों ने नैतिक आदर्शों को व्यवहारिक रूप दिया। नैतिक आदर्शों को क्रियात्मक रूप देना राज्य के कानून का ही काम है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि दोनों शास्त्रों में पारस्परिक निर्भरता है। दोनों में घनिष्ठ संबंध है।

राजनीतिशास्त्र और लोकप्रशासन (Pol. Sc. and Public Administration) —

राजनीतिशास्त्र और लोकप्रशासन के संबंध में विद्वानों में मतभिन्नता है। कुछ विद्वानों का मत है कि दोनों विषय ज्ञान की दो पृथक शाखाएँ हैं, जब की दूसरी विचारधारा के अनुसार दोनों विषय एक हैं।

प्रारम्भ में लोकप्रशासन एक पृथक विषय नहीं था। उसका अस्तित्व राजनीतिशास्त्र की शाखा के रूप में था। लेकिन अमेरिकी विश्वविद्यालयों में इसके अस्तित्व को अलग करने का आंदोलन शुरू हुआ था। इस उद्देश्य से लेखकों ने दोनों विषयों को अलग-अलग ज्ञान की शाखा घोषित की और उनके विचार में राजनीति का संबंध नीति निर्धारण से है जब कि प्रशासन का कार्य उन नीतियों को कुशलता पूर्वक क्रियान्वयन करना है। अतः दोनों को पृथक शाखाएँ मानना ही उचित समझा।

उपरोक्त विचारधारा आज के युग में अमान्य ठहराया गया है। प्रशासन और राजनीति में कोई भेद नहीं है। प्रशासन को राजनीति से एकदम अलग नहीं किया

जा सकता। अतः आधुनिक काल में दोनों विषयों को निकटता पर बल दिया जा रहा है। कुछ विद्वान तो लोक प्रशासन को राजनीति की शाखा मान से अधिक मानने को तैयार नहीं है। डोनाल्ड किस्सले के मत में " प्रशासन राजनीति की शाखा है।"

दोनों विषयों की निकटता इससे भी स्पष्ट होती है कि राजनीतिशास्त्र की परिधि में आने वाले कुछ विषयों का प्रत्यक्ष संबंध लोक प्रशासन से है। उदाहरण के लिए लोक प्रशासन के सम्यक ज्ञान के लिए संविधान का ज्ञान आवश्यक है। प्रशासन के स्वरूप का निर्धारण वस्तुतः देश के संविधान द्वारा होता है। स्थानीय प्रशासन लोक प्रशासन तथा राजनीतिशास्त्र के दायरे में समान रूप से आता है।

अतः निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि राजनीतिशास्त्र तथा लोक प्रशासन में घनिष्ठ संबंध है।

~~[illegible]~~
राजनीतिशास्त्र और मानवविज्ञान (Pol.sc. and Anthropology) —— मानवविज्ञान का संबंध मानव के आदि निवासियों, उसके मौलिक आचरण उसके भौगोलिक जातियों, उसके सांस्कृतिक प्रवृत्तियों एवं रीति-रिवाजों तथा इसकी जातीय विकास तथा उसके इर्द-गिर्द के वातावरण का उसकी राजनीतिक संस्थाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। नाजियों ने रक्त-विशेष की सर्वोच्चता के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। जातीय एकता राष्ट्रीय एकता का एक महत्वपूर्ण आधार है। निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि " मानवविज्ञान से राजनीतिशास्त्र को बहुत कुछ प्राप्त होता है।

राजनीतिशास्त्र और अंकशास्त्र (Pol-sc and Statistics) राजनीतिशास्त्र —— कुछ राजनीतिक तथ्यों को समझने के लिए आंकड़ों का सहारा लेना पड़ता है। किसी भी निष्कर्ष पर आंकड़ों की सहायता से अधिक सफलता पूर्वक पहुंचा जा सकता है। आधुनिक युग में किसी भी सामाजिकशास्त्र के लिए अंकशास्त्र का प्रयोग किया जाता है। निष्कर्षतः अध्ययन प्रणाली के दृष्टिकोण से राजनीतिशास्त्र के लिए अंकशास्त्र का व्यापक महत्व है।

Scanned with CamScanner

राजनीतिशास्त्र और जीवविज्ञान (Pol.sc and Biology)

प्राकृतिक विज्ञानों में राजनीतिशास्त्र के लिए जीवविज्ञान का बहुत महत्व है। Organic theory के अनुसार मानव शरीर की भाँति ही राज्य की रचना एवं कार्य-व्यापार का विकास होता है। हर्बर्ट स्पेंसर" इस सिद्धान्त का प्रमुख प्रतिपादक था।

नागरिकशास्त्र (Civics) :—

राजनीतिशास्त्र का नागरिकशास्त्र से अधिक घनिष्ठ संबंध है। दोनों की उत्पत्ति "सिविस" (Civis) या "पोलिस" (Polis) से हुई है। राजनीतिशास्त्र एवं नागरिकशास्त्र मे निकट संबंध इसलिए स्थापित हो जाता है कि एक आदर्श राजनीति व्यवस्था में ही आदर्श नागरिक की कल्पना की जा सकती है।

अरस्तु के अनुसार "राज्य की उत्पत्ति जीवन की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुई, किंतु इसका अस्तित्व, सभ्य जीवन की आवश्यकताओं के लिए बना हुआ है"।

कुछ विद्वान तो नागरिकशास्त्र को राजनीतिशास्त्र की शाखा मानते हैं, क्योंकि राज्य के बिना नागरिक की कल्पना असंभव है। दोनोंशास्त्रों के विषय वस्तु में जो भी अन्तर हो, लेकिन उनका अनन्य संबंध निर्विवाद है।

राजनीतिशास्त्र और साहित्य (Pol.sc and Literature) :— साहित्य का भी राजनीतिशास्त्र से संबंध है। अधिकांश महान साहित्यिक आंदोलन राजनीतिक विचारों द्वारा होनेवाले आंदोलनों की आत्मा को प्रतिबिंबित करते हैं। राजनीति का साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर राजनीतिक आंदोलनों पर साहित्य का पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता है।

Scanned with CamScanner